Dr. Nutisri Dubey
(Assistant Professor, H. D. Jain College, Ara)
U. G. IV Sem, MJC-05 Western Philosophy

Primary and Secondary Qualities
(मूलगुण और उपगुण)

गुण द्रव्य की वह शक्ति है जिसके कारण आत्मा में प्रत्यय उत्पन्न होता है। अनुभववादी दार्शनिक जॉन लॉक के अनुसार मूल-गुण द्रव्य की वह शक्ति है जो द्रव्य में वास्तव में पाया जाता है। इसे भौतिक द्रव्य का अनिवार्य लक्षण कहा जा सकता है। जब हमारी ज्ञानेन्द्रियों का सन्निकर्ष वस्तुओं के मूलगुणों से होता है तो ये मूलगुण आत्मा में अपनी संवेदना उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार संवेदनाओं के माध्यम से हमारी आत्मा में मूलगुणों का एक प्रतिबिम्ब उत्पन्न हो जाता है। इस प्रतिबिम्ब को ही प्रत्यय (Idea) कहते हैं। घनत्व (Solidity), विस्तार (Extension),

आकार (form), आकृति (figure), गति (Motion), विराम (Rest), संख्या (Number) आदि मूलगुण हैं। ये मूलगुण भौतिक वस्तुओं के साथ-साथ पाये जाते हैं। अतः लॉक इन्हें वस्तुनिष्ठ कहता है। ये हमारी आत्मा की कल्पना नहीं हैं। इससे स्पष्ट होता है कि मूलगुण वस्तुओं में पाये जाते हैं आत्मा में नहीं। ये मूलगुण हमारी आत्मा में अपना प्रत्यय उत्पन्न करते हैं। लॉक के अनुसार इन मूल-गुणों को मापा जा सकता है। इनके गणितीय होने के कारण इनका स्पष्ट ज्ञान हो सकता है। वस्तुतः इन्हें परिमाणात्मक दृष्टि से व्यक्त किया जा सकता है।

मूलगुणों की दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका हमारी आत्मा में उपगुणों के प्रत्यय उत्पन्न करने में है। उपगुणों का ज्ञान परोक्ष रूप से होता है। रंग, स्वाद, गन्ध, शीतलता, उष्णता इत्यादि को उपगुण कहा जा सकता है। लॉक के अनुसार उपगुण वास्तव में वस्तुओं में नहीं पाये जाते हैं। ये आत्मनिष्ठ हैं। किन्तु उपगुणों के आत्मनिष्ठ होने पर भी उनको उत्पन्न

करने की शक्ति आत्मा में नहीं है। उपगुणों को उत्पन्न करने की शक्ति भी वस्तुओं के मूलगुणों में ही होती है। एक ही वस्तु (जैसे- मिठाई अथवा चाय) किसी व्यक्ति को अधिक मीठी, किसी व्यक्ति को कम मीठी, किसी व्यक्ति को कम गर्म तथा किसी को अधिक गर्म प्रतीत होती है। इससे सिद्ध होता है कि उपगुण आत्मनिष्ठ (Subjective) होते हैं। लॉक के अनुसार यदि ये उपगुण वस्तुनिष्ठ (Objective) होते तो सभी व्यक्तियों को समान रूप से अनुभूत होते। लॉक ने उपगुणों को संवेद्य (Sensible) और उपगुणों को असंवेद्य (Unsensible) कहा है। इन उपगुणों के प्रत्यय वाह्य वस्तुओं को प्रतिबिम्बित नहीं करते हैं। किन्तु वाह्य वस्तुओं की ओर संकेत अवश्य करते हैं। वस्तुतः उपगुण वस्तुओं की उस शक्ति की ओर संकेत करते हैं, जो हमारे मन में उपगुणों के प्रत्ययों को उपलब्ध करती है।

मूलगुण और उपगुण में भेद -

1- मूलगुण द्रव्य के अविच्छेद वास्तविक धर्म हैं। उपगुण वस्तु के धर्म नहीं हैं।

2- मूलगुण की सत्ता ज्ञाता पर निर्भर नहीं, परन्तु उपगुण ज्ञाता पर निर्भर हैं।

3- मूलगुण निरपेक्ष है और उपगुण सापेक्ष है। उदाहरणार्थ एक ही जल गर्म और ठंडे की संवेदना विभिन्न परिस्थिति में उत्पन्न कर सकता है। अतः गर्म और ठण्डा प्रतीत होना वस्तु का उपगुण है।

4- मूलगुण हमारी बुद्धि में संवेदना उत्पन्न करते हैं तथा उस संवेदना में अपना प्रतिबिम्ब छोड़ देते हैं। ये प्रतिबिम्ब ही प्रत्यय है। उपगुण, मूलगुणों के कारण इन्द्रिय संवेदन के रूप में उत्पन्न होते हैं।

प्रधान गुण (मूलगुण) और उपगुण का यह वर्गीकरण लॉक द्वारा किया गया है। बर्कले मूलगुण और उपगुण के भेद को नहीं मानते। उन्होंने इस वर्गीकरण का विरोध किया है। बर्कले के अनुसार प्राथमिक गुणों को

गौण गुणों से पृथक करके नहीं सोचा जा सकता है। अन्य गुणों से पृथक कर देने से विस्तार, गति तथा आकार अचिंत्य हो जाते हैं। बर्कले का कहना है कि "कोई वर्ण या रंग ऐसा नहीं है जो विस्तारमय न हो और कोई विस्तार ऐसा नहीं है जो रंगीन या वर्णयुक्त न हो।" इसलिए वर्ण या रंग जो गौणगुण माना जाता है और विस्तार जो प्रधानगुण माना जाता है, दोनों सदा साथ-साथ पाये जाते हैं। अतः दोनों को भिन्नाश्रय न कहकर एकाश्रय कहना अधिक उपयुक्त है।